प्रौढ़ शिक्षा माला, संख्या ३४
भारत सरकार द्वारा स्वीकृत





गोपी ताँगेवाला

इदारा तालीम व तरक्की जामिया, देहली

मक्तबा जामिआ लि०,
देहली

दो शब्द

27

इस पुस्तक-माला का उद्देश्य है कि कम पढ़े-लिखे सियानों में :

(१) पुस्तकें, अखबार और पत्रिकाएं आदि पढ़ने और समझने की योग्यता बढ़े।

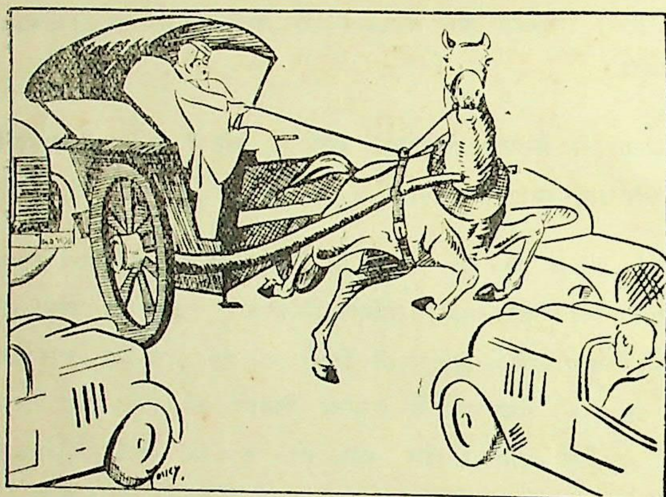
(२) जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली बातों के बारे में बुनियादी जानकारी और शब्द-भण्डार प्राप्त हो।

इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये, इदारा तालीम-व-तरक्की जामिआ (प्रौढ़ शिक्षा-विभाग, जामिआ मिल्लिया) देहली ने १० साल तक सियानों में काम करने के बाद उनकी शिक्षा का एक पाठ्य-क्रम तैयार किया है। वह इस पाठ्य-क्रम के अनुसार सियानों की रुचि और लाभ, उनकी मानसिक योग्यता और शौक को ध्यान में रखकर छोटी-छोटी पुस्तकें प्रस्तुत करवा रहा है। अब तक इस विषय की ३०० पुस्तकों के मसवदे हिन्दी में तैयार हो चुके हैं।

भारत सरकार की एजुकेशन मिनिस्टरी के हम आभारी हैं कि उसने हमारे इस परीक्षण को पसन्द किया। उसकी आर्थिक सहायता से ही हम ये पुस्तकें आपको भेंट कर रहे हैं।

शफीकुर रहमान किदवाई (डायरेक्टर)
मुश्ताक अहमद (प्रधान सम्पादक)
वाई० सुरेन्द्र पाल (सम्पादक)
जिनेन्द्र कुमार ,,
मगीन चन्द ,,

गोपी ताँगेवाला



गोपी का बचपन

हम सब पाठशाला में पढ़ते थे । गोपी की शरारतें बस कुछ न पूछिये । एक दिन पंडित जी ने बहुत मारा, हाथ पांव बांध कर कमरे में बंद कर के बाहर से ताला लगा दिया । शाम को आकर जो देखते हैं तो कमरे की खिड़की खुली पड़ी है और गोपी लापता । न मालूम उसने हाथ पांव कैसे खोले और खिड़की का कबजा किस प्रकार तोड़ा । देखने वालों ने बताया कि वह तीसरे पहर छत से कूदा, सड़क पर गिरा और उठ कर भाग गया । लोग

कहते हैं कि वह आदमी नहीं शैतान है। आज से नहीं छुटपन से ही चंचल है। पांच छः वर्ष की आयु में वह अपनी मां के लिये एक मुसीबत था। वह बेचारी जब तंग आ जाती तो उसे कोठरी में बंद कर देती थी। परन्तु कोठरी बंद हो या खुली, गोपी की शरारत जारी रहती। चीजों को तोड़-फोड़ डालना तो उस के बायें हाथ का खेल था। एक दिन उसे कोठरी में कोई खेलने की चीज नहीं मिली तो बहुत निराश हुआ। परंतु ढूंढते ढूंढते अंत में सूत की गठरी हाथ लग गई। मां ने दरी बुनने के लिये बड़े चाव से सूत कात कर रख छोड़ा था। गोपी ने गठरी खोल कर सूत को तोड़ना शुरू कर दिया। शाम को उसकी मां ने जब किवाड़ खोला तो सारा सूत रुई बन चुका था।

चौदह-पंद्रह वर्ष की आयु में एक दिन उसके पिता ने किसी अपराध पर उसे रस्सी से बाँध कर मारा, वह रस्सी तुड़ा कर भाग निकला। पिता क्रोध में थे। उन्हों ने पीछा किया। गोपी ने जब देखा कि पिता भी भागे हुये आ रहे हैं और पकड़ा ही चाहते हैं तो झट सड़क छोड़ पंचायत-घर की राह ली और दौड़ता हुआ सीढ़ियों पर चढ़ गया। पिता की आंखों से ओझल हो गया। सीढ़ियों

से बिल्कुल मिलाता हुआ एक कुंआ था। अपनी तेज़ी और घबराहट में कुंआ नहीं देखा। एक दम कुंए में जा गिरा। परन्तु हवास ठिकाने थे। पानी के पास पहुंचते पहुंचते उसने टांगें फैला दीं। और कुएं की दीवारों में पांव अड़ा कर खड़ा हो गया।

पंचायत घर में उस समय कोई न था। किसी को इस दुर्घटना का पता भी न चला। उधर गोपी कुएं में खड़े हुये दरबान को कड़क कड़क कर आवाज दे रहे थे, "ओबे चल, मैं मरा, मैं गिर गया, मुझे कुएं से निकाल"। एक सज्जन पंचायत- घर के पास ही रहते थे, अफीम के बड़े प्रेमी थे। वे उस समय अफीम में मस्त पड़े थे। बहुत समय के बाद जब वे पिनक से चौंके तो उन के कान में आवाज गई। वे टहलते हुये कुंए पर आये और झांक कर कहा, "अबे तू यहां कहां से आगया?" गोपी ने दो चार और सुनाई और कहा, "अबे जल्दी निकाल, मैं मरा जा रहा हूँ।" अफीमची साहब की सहायता से वह मौत के मुंह से बच कर आ गया। सिर में चोट लग गई थी, खून भी बह रहा था। बड़ी बुरी दशा हो रही थी।

गोपिया के गुण

यही गोपी है जो आज दिल्ली के चोटी के तांगे वालों में है और 'गोपिया' कहलाता है। आदमी वह बुद्धिमान नहीं तो थोड़ा बहुत होशियार ज़रूर है। एक बार किसी रास्ते से होकर निकल जाये तो दोबारा बताने की जरूरत नहीं। देहली की सड़कें एक दूसरी से इतनी मिलती जुलती हैं कि पढ़े लिखों को भी धोखा हो जाता है। अच्छे २ रास्ता भूल जाते हैं। और फिर सड़कों के नाम, अलैग्जैंडर रोड, हार्डिंग ऐवन्यू, किंगजार्ज रोड, एक दो नहीं सैंकड़ों सड़कें हैं। परन्तु जिस सड़क को कोई नहीं जानता उसको गोपिया जानता है। लेडी हार्डिंग अस्पताल, विलिङ्गडन अस्पताल, कमांडर-इन-चीफ की कोठी, निजाम का महल, सेक्रेटेरियट, तो कोई चीज ही नहीं हैं! कोई अस्पताल, कोठी और होटल ऐसा होगा जिसको यह सबसे पहले न समझ जाये।

जब उसने देखा कि नई देहली की सवारियों में अधिकतर अंग्रेजी बोलने वाली होती हैं तो उसने काम चलाऊ अंग्रेजी भी सीख ली। वन, टू, थिरी, फोर, फाइव, सिक्स, सैवन, और लेफ़्ट (बाएं) राईट (दांएं) पहले ही से जानता था।

नामों को वह ठीक से तो नहीं बोल सकता परन्तु ठीक उच्चारण करने वालों को समझाने में देर भी नहीं करता। जैसे "मेटकाफ हाउस" को स्वयम् तो "मटका हौज" ही कहता है, परन्तु पहुंचा सबको वहीं देता है।

ऐसे ही रेल और स्टेशन के बारे में भी याद रखता है। जिस स्टेशन से तीस चालीस गाड़ियां रोज आती जाती हों उन के समय को याद रखना हँसी खेल नहीं है और फिर ऐसे तांगे वाले के लिये जो स्टेशन की सवारियां कम बिठाता हो। फिर भी बंबई, हावड़ा, जबलपुर, कानपुर, लखनऊ, मद्रास, हैदराबाद, आदि की तरफ जाने वाली गाड़ियों के समय इसे कुछ न कुछ मालूम ही रहते हैं। एक बात यह भी है कि वह इन में से बहुत से शहरों की सैर भी कर चुका है। रेल का टिकट वह यों ही कम लेता है, और पिछली आयु में तो कभी लिया ही नहीं और हर बड़े शहर का थोड़ा बहुत हाल जानने के कारण वह सवारी के लिये मनोरंजक भी है और लाभदायक भी। घोड़ा तांगा सदा सुन्दर रखता है। ई० आई० आर०, एन० डबल्यू० आर०, बी० बी० एण्ड सी० आई०, की लाइनों को तो वह शायद नहीं जानता

मगर उन के अलग २ स्टेशन, प्लेटफार्म, टिकट-घर और मुसाफिर खानों को जरूर जानता है। थोड़ी बहुत जानकारी उस ने चुंगी के नियमों की भी प्राप्त कर ली है। यों वह सवारियों की सहायता करता है।

गोपी का रोज़नामचा

परन्तु जहां बहुत सी गुण की बातें इस में हैं वहां बुरी बातें भी हैं। मुझ से साफ पूछो तो कहूंगा कि जानता तो सब कुछ है, परन्तु उस को बरतना नहीं जानता। जरा सी बात पर तेजी में आ जाता है और हानि उठाता है। बात करना जानता तो है परन्तु जंगलीपने पर उतर जाता है। शरीर में शक्ति है। चार आदमियों का काम अकेला कर सकता है और करता भी है, परन्तु शेखी में आकर दूसरों के लिये भी मुसीबत बन जाता है। वह अपनी इसी आदत के कारण सदा परेशान रहता है। मैं ने उसे कभी सुखी नहीं देखा।

मेरी इस बात का अनुभव आपको उसकी पिछले कुछ दिनों की डायरी से लग सकेगा।

(१) एक दिन उसका घोड़ा निदयता के कारण पकड़ा गया और पंद्रह दिन अस्पताल में

रहा। पंद्रह रुपये जुर्माने के दिये तब घोड़ा वापिस मिला।

(२) घोड़ा किश्तों में खरीदा था, पांच रुपया प्रति दिन देता रहा। स्वयम् लिखना नहीं जानता, (यों उलटा सीधा कुछ पढ़ लेता है) पिछले मास हिसाब लगाया तो ५० रुपये का फर्क निकला। दोबारा देने पड़े।

(३) एक दिन नौकर धुरा तोड़ लाया। बीस रुपये में धुरा आया, तीन रुपये मजदूरी के गये।

(४) फिर तांगे की बम टूट गई। दो रुपये में ठीक हुई।

(५) एक दिन सवारी ने दिन भर का तांगा किया, कुतब की सैर की, वापसी में कहीं उतरी और फिर लौट कर नहीं आई। इन्तजार और खोज में गोपी के कई घंटे बरबाद हो गये और परेशान अलग हुआ। सवारी अपना एक रोटी का बर्तन अवश्य तांगे में छोड़ गई थी। वही उस का किराया हुआ।

(६) अस्तबल में एक दिन एक सांड कहीं से आ घुसा, गोपी की चारपाई तोड़ गया और घोड़े का दाना खा गया।

(७) एक दिन नौकर तांगा अस्तबल में पहुंचा गया और दिन भर की मजदूरी ले कर कहीं चम्पत हो गया। ये बातें वे हैं जो दो महीने के अन्दर २ हुईं। हर तीसरे रोज कोई न कोई घटना हो ही जाती थी। ये केवल साधारण बातें हैं। दो एक विशेष घटनायें भी सुनिये।

(१) एक बार मोटर से टक्कर हो गई। मुकदमा चला, पंद्रह दिन की जेल हुई। जेल में किसी से लड़ पड़े तो एक हफ्ते की और बढ़ गई।

(२) एक बार चोरी में पकड़े गये। महीनों मुकदमा चला परन्तु मान के साथ बरी हो गये। हो सकता है कि चोरी में हाथ न हो परंतु लोगों ने उसे जुवा खेलते अवश्य देखा है। और यह तो इसी डायरी की घटना है कि एक दिन सवारी के कहने में आकर तांगा तेज कर दिया और चुंगी पर नहीं ठहरे। पुलिस ने पकड़ लिया। थाने आना-जाना पड़ा। तीन चार रुपये की चपत पड़ गई।

(३) सनकी इतना है कि अभी हमारे दफ्तर में चपरासी की जगह खाली हुई तो कहने लगा, "मुझे रख लो, सब काम करूंगा, बस चालीस रुपये दे देना।"

मैं ने एक दिन कहा, "भाई मेरा भी तांगा

रखने का विचार है। कुछ सलाह दोगे ?" इस पर वह बोला, "बड़ा गंदा काम है, इससे भगवान बचाये"। मैंने कहा, "भाई काम तो कोई भी गंदा नहीं होता। काम को गंदा तो हम तुम कर देते हैं। तुम काम ठीक तरह से करो तो लोग तुम्हारा भी आदर करेंगे। कमा कर खाने वाला तो परमात्मा का मित्र होता है। हर काम को ढंग से करना चाहिये। इसी का नाम ईमानदारी है। तुम भी खुश परमात्मा भी खुश और सवारी भी खुश। अच्छा अब तुम मुझे चीजों की सूची बनाकर दो और उन का मूल्य भी मुझे बता दो। फिर मैं प्रबन्ध कर लूंगा।" वह मुझे लिखाने लगा।

तांगे के सामान

"इक्कीस रुपये का साज़, दोहरा मंगाओ चालीस का। कानपुर का अच्छा होता है। देसी मंगाओगे तो सत्तरह में आयेगा।"

मैंने पूछा, "साज़ में होता क्या क्या है ?"

तो गोपी ने कहा, "तुम नहीं जानते ? सुनो। तंग, बहारकस, चौंगी (बड़ीबम) सीना बंध, जोत, रासे (बागें), पट्टे और लगाम! और चलो मॉक जोत दुमची, पट्टे में अकवे, सुरवां, गुलतनी, मुहीरा, चांद। पांच चीजें हैं। अच्छी लालटैन सात रुपये में

आयेगी और यों सवा दो, साढ़े पांच और पौने पांच, चार दाम हैं। रबड़ गुडइयर का अच्छा होता है। सवा सोलह रुपये उसका दाम है।"

मैंने कहा "बस ?" तो कहने लगा, "वाह खूब करेंगे आप तांगा ! अभी हुआ ही क्या है ? यह तांगा है कि हंसी खेल ? लिखिये:-- जोड़ी १५), धुरा १४), किशती २५), बमें ७), बैठक १४), पायदान १०), कमानें १५), रकाबें चार २), पहिये काबले छः २।।), टब की लकड़ियां ४), टब का कपड़ा ६), चढ़ाई १), मंढाई १), हंडलियां ३), थामू ६)।"

"अरे भाई अब तो सब हो गया। तुम तो सरपट चले जा रहे हो, और क्या क्या लिखवाओगे ? मैं बस एक तांगे का सामान पूछ रहा हूँ"

"अरे भैया तो लिखो भी। एक का भी लिखोगे या नहीं ? आप तांगा करेंगे। यह भी कोई धुनिये जुलाहों का काम है ? और मैं तो क्या जानता हूँ, बम्बई में एक आदमी मिला था। वह कहता था कि यह ऐसी शिक्षा है जिसका कोई और छोर नहीं"

"तो क्या और कुछ बाकी है ?"

"हां हां चलो :

टट्टी ३), लीद खोरा १), दोनों हुक ८ आने, लालटैन का हुक ८ आने, कुंडे छपके कमानियां १२), गद्दा (लकड़ी तकिया दोनों) ३), पोशीश १५), तांगा पास कराई २०) ।

और हां, दाने का कठला रह गया इस के लिये कोई लकड़ी का बक्स ले लेना"

मैंने कहा "अच्छा भाई और कोई उपदेश ?" कहा "और उपदेश क्या ? पट्टा, बिल्ला, लाईसैंस हर समय साथ रहे। और इसी प्रकार पायदान, घंटी, लालटैन, तांगे में हर समय मौजूद होनी चाहिये। घोड़े को चार बार दाना दो। सुबह, दोपहर, शाम, रात। छः सेर दाना, दो धड़ी कुट्टी, चार सेर चोकर और सेर भर गुड़। बहार कस ढीला रहे, जोत दोनों बराबर हों। तंग का ढीला होना भी जरूरी है। सीना बंद छाती से इधर-उधर न हो। रिकाबों की आठों ढिबरियां सही हों। पहियों में चार ढिबरियां होती हैं। चालें चार हैं, कदम, दुलकी, रौहाल और मैदान। कमेटी से आठ घंटे चलाने की आज्ञा है। घोड़ा मर्द जानवर है। उस का ध्यान रखो। थान पर घंटा डेढ़ घंटा सोता है और वैसे तांगे में जुता हुआ हर समय सोता ही रहता है। और

देखो चाबुक कभी न भूलना । यह सब से जरूरी है ।"

उस ने पूरा घोड़ा नामा लिखा दिया । जैसा मैंने कहा था मनुष्य वह गजब का है परन्तु नियम और व्यवस्था का शत्रु है ।

अच्छे घोड़े की पहिचान

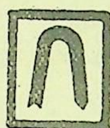
सब बातें तो लिखा दीं परन्तु घोड़े का हाल अब भी भूल गये । मुझे याद नहीं रहा । कुछ दिनों के बाद मिला तो कहने लगा, "घोड़ा गर्रा अच्छा होता है और मुशकी बहुत अच्छा और यों तेलिया, कुम्मीत, मुलतानी, मक्की, सब्जा नीलागर्रा, समंद, अबलक, अरबी अमृतसरी, सब ही चलते हैं । परन्तु हां, गुण यह है कि छाती चौड़ी हो, कान छोटे हों, आंखें बड़ी और आयु पांच वर्ष । अगले हाथ पैरों में न बैल हड्डी हो और न बजर हो, न कारन हो, न बैजा हो, न कुन्ना हो । पिछले पांव साफ हों । झील कुरंज न हो, कुलंज भी न हो, नाप में तेरह तीन हो । पांव जमीन से एक बालिश्त ऊंचा उठा कर डालता हो । रौहाल या दुलकी, मैदान या कदम एक चीज जमती हुई हो । और देखो घोड़ा-तांगा करने तो चले हो पर मेरा तो विचार है

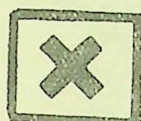
कि तुम कोई किताब लिखने के फेर में हो। खैर जो भी हो घोड़े के दाने में समय की पाबंदी बहुत जरूरी है। समय टाल कर दोगे तो सोना भी बेकार है। और यह जान लो कि घोड़ा और फोड़ा हाथ फेरने से तैयार होते हैं। कोचवान तांगे में हो या इक्के में या रेढ़ी में कभी बाईं ओर न बैठे। और सवारी को उतारते ही तांगा अच्छी तरह दिखा ले।" एक उपदेश आपने कमेटी वालों के लिये भी दिया "लाइसेंस उस समय मिलना चाहिये जब तांगे वाला सड़कों की जानकारी की परीक्षा भी दे।"

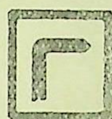
मैंने गोपी से कहा, "भाई तुम तो तांगे-घोड़े के बारे में खूब जानते हो। यदि कहीं तांगा ड्राइवरों का ट्रेनिंग कालेज खुले तो तुम्हें उस में प्रोफेसर बनना चाहिये।" इस पर गोपी हंसते २ बोला, "यह तो आप की कृपा है बाबूजी। यदि प्रोफेसर बन गया तो आप का मुंह मीठा करूँगा.... हां बाबूजी सबसे जरूरी बात तो कहना ही भूल गया।" मैंने कहा, "भाई देर हो रही है अपनी रामकथा जरा जल्दी सुना दो।" गोपी ने गंभीर मुद्रा बना कर कहा, "आदमी उस

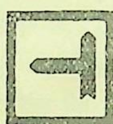
समय तक घोड़े की लगाम हाथ में न ले जब तक सड़कों पर लगे हुये निशान और संकेतों को वह

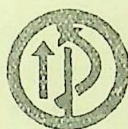
सड़कों के चिन्ह


आगे पेचीदा मोड़ है।

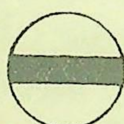

चौराहा

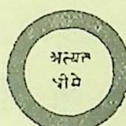

दाईं ओर मोड़ है।

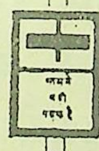

बगल में सड़क है।

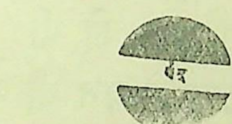

अगली गाड़ी को पकड़ना मना है।

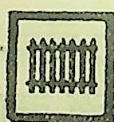

आगे पेचीदा सड़क है।


रास्ता बन्द है।






अब तेज़ चला सकते हो।


आगे रेल की पटरी है।

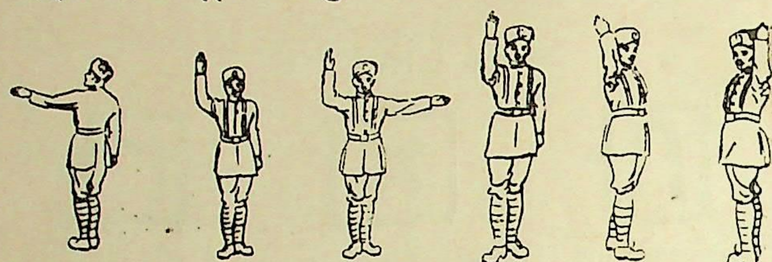

हार्न बजाना मना है।


आगे स्कूल है।


आगे सड़क खराब है।


आगे ढालू पहाड़ी है।

अच्छी तरह न समझ ले। साथ ही चौराहों पर खड़े रहने वाले ट्रैफिक पुलिस और मोटर वालों के



१. पीछे की गाड़ियां रुक जाएं। २. सामने की गाड़ियां रुक जाएं। ३. आगे पीछे की गाड़ियां रुक जाएं। ४. सामने की गाड़ियां आगे बढ़ें। ५. दाएं ओर की गाड़ियां आगे बढ़ें। ६. बाएं ओर की गाड़ियां आगे बढ़ें।

इशारे को न समझता हो वरना खुद भी डूबेगा और यार को भी ले डूबेगा। अगर भाग्य से दुर्घटना से बच भी गये, तो फिर पुलिस, चालान मुकदमा, अदालत और दण्ड का सिलसिला शुरू हो जायेगा"। इसके बाद उसने एक चार्ट निकाला और मुझे सड़क के संकेत समझाने बैठ गया।

गोपीएक कोचवान है, और बहुत अच्छा कोचवान। परन्तु यदि वह अपने मन को कुछ वश में रख सकता तो वह आज कोचवानों का सरदार होता। लाल किला और कुतुब मीनार देखने के लिये जब लोग दूर-दूर से आते तो उन्हें गोपिया से मिलने का भी चाव होता।

काम

इस पुस्तक माला की
बड़ी रोचक और
पढ़कर लाभ

१. गोपी ताँगेवाला
२. सम्पत कहार
३. अब्दुल रहमान राज
४. छोटेलाल बढ़ई
५. कल्लू हलवाई
६. भूलजी रसोइया
७. द्वारका प्रसाद नाई
८. प्यारेलाल दर्जी
९. फूलचंद–मूलचंद पंसा
१०. मधु मक्खी पालिय,